>

Title: Need to expedite the payment of wages to villagers under Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Scheme in the country.

श्रीमती अन्नू टण्डन : सभापति महोदय, मैं सबसे पहले ग्रामीण विकास मंत्रालय एवं केन्द्रीय सरकार को धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने महात्मा गांधी नरेगा में बैंकिंग सिस्टम के द्वारा पैसे देने का काम शुरू किया गया है। पहले कैश में पैसे दिए जाते थे, जिसमें बहुत दिक्कत थी। परंतु आज महात्मा गांधी नरेगा के अंतर्गत किए जाने वाले भुगतान के संबंधित समस्या पर मैं इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं।...(व्यवधान)

12.28 hrs.

At this stage Shri Chandrakant Khaire and some other hon. Members came and stood on the floor near the Table.

महात्मा गांधी नरेगा के मूल उद्देश्य को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि ग्रामीणों को अपनी मेहनत का भुगतान समय से मिले और उन्हें बैंकों में बहुत चक्कर न लगाने पड़े।...(व्यवधान) वर्तमान मे स्थिति ऐसी है कि बैंको की शाखाएं ज्यादा नहीं हैं।...(व्यवधान) अधिकतम यह जो शाखाएं हैं, वह टाउन एरिया में हैं या तहसील में हैं, लेकिन वह गावों में नहीं हैं।...(व्यवधान) क्योंकि वह कमर्शियली वायबल नहीं होती हैं, इसलिए वह शाखाएं कम हैं।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप लोग सीट पर जाइए। मैं इनके भाषण के बाद आपको बोलने का मौका दूंगा।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती अन्नू टण्डन : उसका नतीजा यह होता है कि हमारे किसानों को अपनी मजदूरी का भुगतान लेने के लिए काफी दूर तक जाना पड़ता है।

सभापति महोदय : आप लोग कृपया करके अपनी सीट्स पर जाइए।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती अन्नू टण्डन : हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने अभी हाल ही में इस समस्या के बारे में महात्मा गांधी नरेगा समीक्षा कार्यक्रम के दौरान ध्यान आकर्षण किया था।

12.30 hrs.

At this stage Shri Chandrakant Khaire and some other hon. Members went back to their seats.

उस दौरान उन्होंने इस पर चिंता व्यक्त की थी और कॉन्करेन्ट ऑडिट की भी बात की थी। उदाहरण के तौर पर मेरे संसदीय क्षेत्र उन्नाव के सुमेरपुर में कुछ महिलाएं मेरे पास आयी थीं। उन्होंने मुझसे यह शिकायत किया था कि उनकी मेहनत का पैसा उन्हें समय पर नहीं मिल पाता है। कई बार वे बैंकों के चक्कर लगाती हैं, लेकिन वहां के बैंक कर्मचारी उनसे अधिकतर गुस्से से बात करते हैं और उनके साथ बहुत बुरी तरह से ट्रीट करते हैं। कभी-कभी उन लोगों को वे बैंक से बाहर भी निकाल देते हैं। इस पर हम लोगों को विचार करना पड़ेगा।

पहले तो यह तय करना है कि यदि ग्रामीण पैसा लेने जा रहा है तो ऐसा न हो कि वह पूरे दिन बैंक में लाईन में ही खड़ा रहे और इसकी कोई गारंटी न हो कि उसे उसी दिन उसके पैसे का भुगतान हो जाएगा। अक्सर ऐसा होता है कि उसे दुबारा अगले दिन बुलाया जाता है। इसका नतीजा यह होता है कि उनकी एक दिन की दिहाड़ी चली जाती है। वे उस दिन मजदूरी नहीं कर पाते क्योंकि उन्हें पूरा दिन बैंक में अपने पुराने भुगतान के लिए खड़ा होना पड़ता है।

यहां पर आज मैं यह जरूरत महसूस करती हूं कि बैंक और एजेंसी, जो ग्रामीणों को भुगतान देते हैं, वे सही तरीके से उन्हें भुगतान करने की कोशिश करें या हमारा बैंकिंग से संबंधित मंत्रालय कोई दूसरा तरक़ीब निकाले कि मोबाईल बैंकिंग यूनिट्स घूमना शुरू करे या कोई और एजेंसी इसमें भागीदार बने। ...(व्यवधान) लेकिन यह एक समस्या है कि बड़ी मुश्किल से तो उनकी मजदूरी का भुगतान होता है और वह भी एक दिन की मजदूरी जाने के बाद। इसमें अगर गरीबों की कुछ मदद हो जाए तो बहुत अच्छा होगा।

सभापति महोदय :

श्री पन्ना लाल पुनिया,

श्री एस.एस. रामासुब्बू,

श्री कमल किशोर 'कमांडो',

श्री सी.आर.पाटिल,

श्री शिवकुमार उदासी,

श्री देवजी एम. पटेल और

श्री ए.टी. नाना पाटील स्वयं को श्रीमती अन्नू टन्डन द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करते हैं।